छकड़ा भर मछलियाँ

लेखन: जुडित बॉडनर
चित्र: अलैक्सी नचोव
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

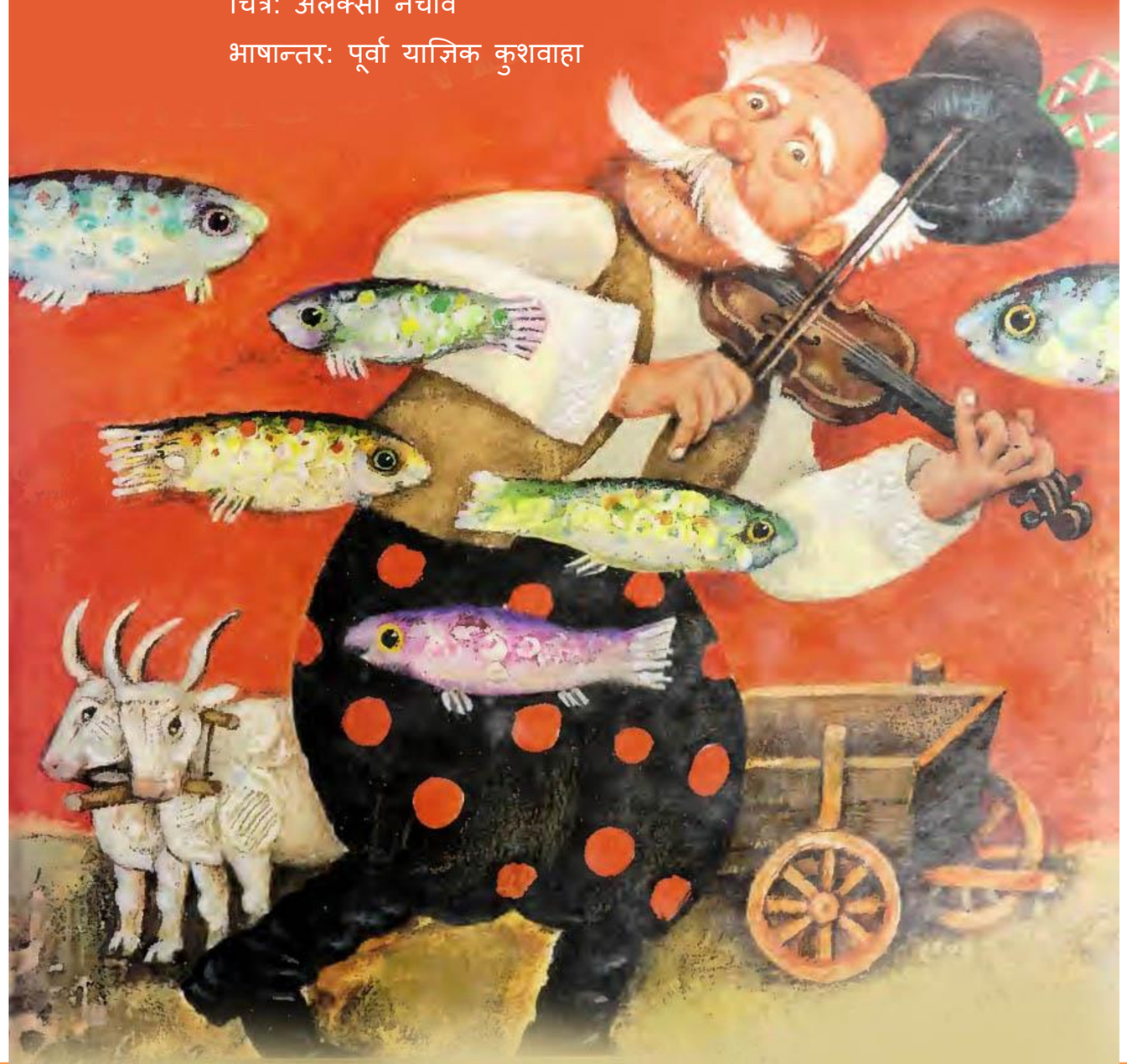

एक समय एक बूढ़ा किसान था। उसका और उसकी नाक-भौं सिकोड़े रहने वाली बीवी का एक छोटा-सा घर था। उसके पीछे एक सब्ज़ी बागान था और उसके परे खासा बड़ा चरागाह। उसके बैल बूढ़े ज़रूर थे, पर अब भी ताकतवर और काम करने को हमेशा तैयार रहते थे। उनके पास एक उदार दुधारु गाय थी, एक मादा सूअर थी जो हर साल बच्चे जनती थी, एक सूअर था, और थीं तीन दर्जन मुर्गियाँ। सो उनके पास काफ़ी मटर और टमाटर, आलू और गाजर, पनीर और मक्खन, सूअर का माँस और टांगें, अण्डे और शोरबा, और कभी-कभार तो भुनी हुई मसालेदार मुर्गी तक होती थी।

पर उसकी बीवी के लिए इतना सब भी काफ़ी न था। उसे तो बस वह चाहिए था जो उनके पास नहीं था।

यह लुभावना किस्सा एक परेशान बूढ़े, उसकी कभी संतुष्ट न होने वाली बीवी और एक धूर्त लोमड़ी का है, जो उन दोनों को छकाती है। यह सभी उम्र के पाठकों को हंसाएगा।

छकड़ा भर मछलियाँ

लेखन: जुडित बॉडनर
चित्र: अलैक्सी नचोव
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एक समय एक बूढ़ा किसान था। उसका और उसकी नाक-भौं सिकोड़े रहने वाली बीवी का एक छोटा-सा घर था। उसके पीछे एक सब्ज़ी का बागान था और उसके परे खासा बड़ा चरागाह। उसके बैल बूढ़े ज़रूर थे, पर अब भी ताकतवर और काम करने को हमेशा तैयार रहते थे। उनके पास एक उदार दुधारु गाय थी, एक मादा सूअर थी जो हर साल बच्चे जनती थी, एक सूअर था, और थीं तीन दर्जन मुर्गियाँ। सो उनके पास काफ़ी मटर और टमाटर, आलू और गाजर, पनीर और मक्खन, सूअर का माँस और टांगें, अण्डे और शोरबा, और कभी-कभार तो भुनी हुई मसालेदार मुर्गी तक होती थी।

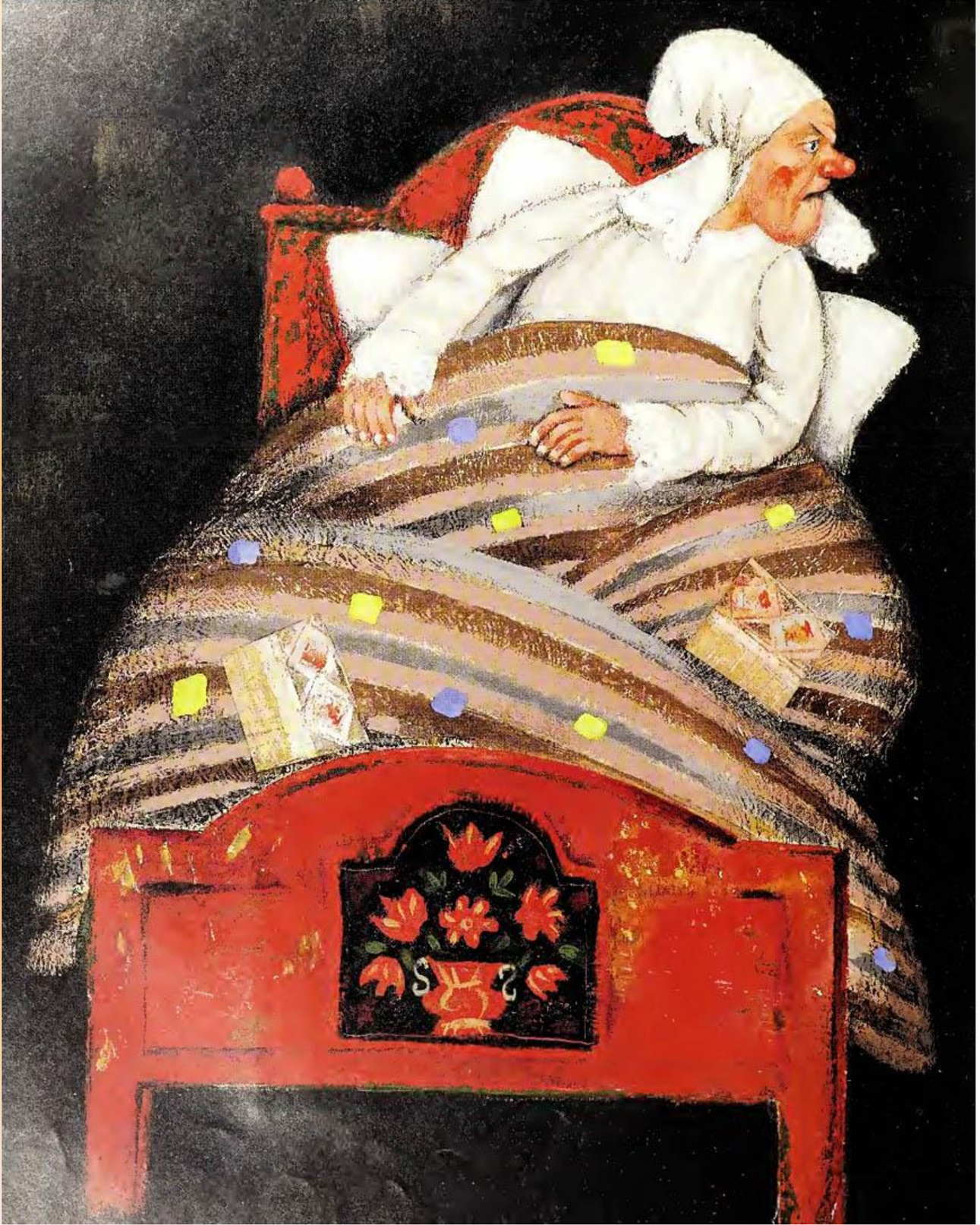

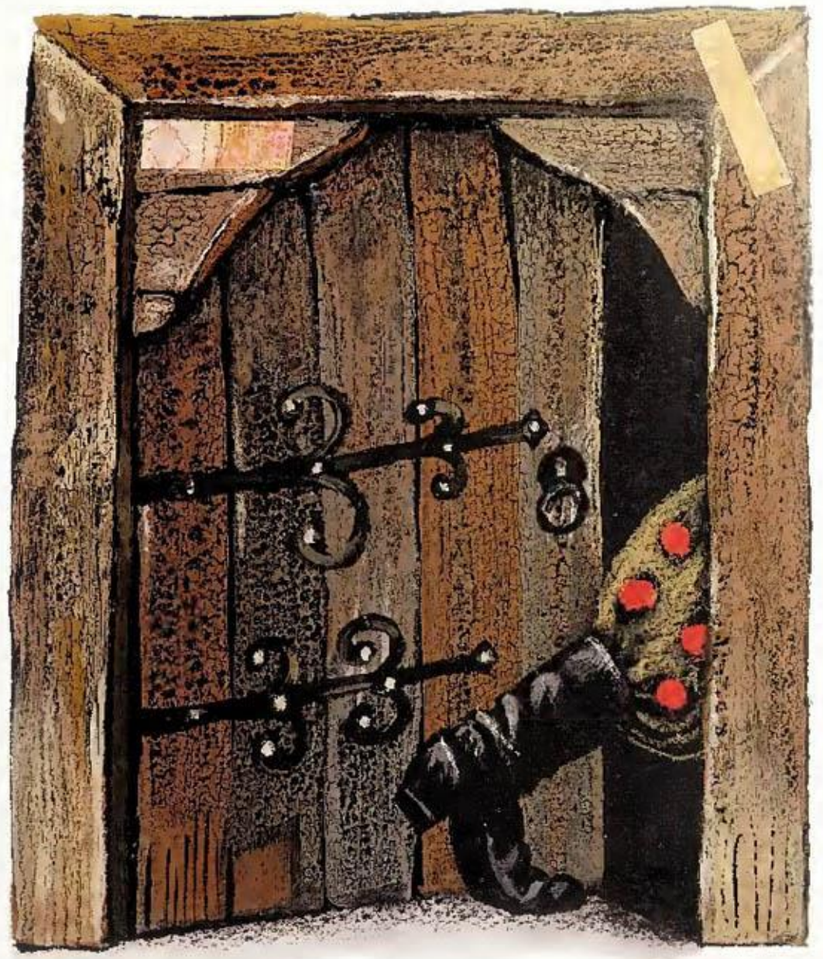

बूढ़ा किसान एक संतोषी जीव होता, अगरचे उसकी बीवी उसे परेशान न करती रहती। वह सालों से शिकायत करती रही थी कि उनका घर निहायत छोटा और टूटा-फूटा है, उसके कपड़े नीरस ओर भद्दे हैं, और उसका खाविन्द बेवकूफ़ और महा-आलसी है। सालों साल बूढ़ा यह सब सुन सिर्फ अपना सिर झटकता और अपने काम-धंधों में जुट जाता।

तब एक दिसम्बर के दिन उसकी बीवी ने तय कर लिया कि वह न तो पनीर, न मक्खन, न सूअर का माँस, ना ही उसकी टाँगें खा सकती है। उसके नाज़ुक और परिष्कृत स्वाद को बस एक ही चीज़ भा सकती है, मछली।

"मछली!" किसान ने अचरज से कहा। "घोर सर्दी है। मछली पकड़ने वाले सारे पोखर-ताल जम कर ठोस हो चुके हैं। पास बॉलेटन तालाब भी चार इंच चौड़ी बर्फ़ से ढ़का है।"

"खैर, तुमसे तो कोई उम्मीद वैसे भी नहीं रखनी चाहिए," उसकी बीवी चिढ़ कर बोली।

उस पल के बाद से बुढ़िया को मछली के सिवा कुछ सूझता ही न था। जनवरी और फरवरी में उसने नैपकिनों और मेज़पोशों पर कशीदे से गॉब्रो मछली काढ़ी। मार्च और अप्रेल में उसने अपनी डबलरोटियों को बंगड़ा मछली का आकार दिया। मई में वह दिन-रात 'मोती मच्छीमार' गीत गुनगुनाती रही - यह मछलियों के बारे में अकेला गीत था, जो वह जानती थी।

बूढ़े बाबा ने सब कुछ अनदेखी और अनसुनी करने की कोशिश की। पर वह घर में जहाँ भी नज़र डालता उसे सिर्फ़ और सिर्फ़ मछली ही नज़र आती। सुड़सुड़ाते सूअर के बच्चे उसे मोटी भूरी रोहू से दिखते। बीवी के घंघराले बाल उंगली-सी पतली मछलियों से नज़र आते और उसके शरीर से उसे गॉब्रो के तेल की बू आती। रात सपने तक में उसे ट्राउट और हैलिबट मछलियों के सपने आते।

जून का महीना आधा ही बीता था कि बूढ़ा पूरी तरह आज़िज़ आ गया। उसने मछली पकड़ने की बंसी और तीन जाल लिए, उन्हें अपने छकड़े में पटका और जंगल के रास्ते निकल पड़ा।

उसी जंगल के दूसरे छोर पर एक लोमड़ी रहती थी। बाकी लोमड़ियों की ही तरह वह भी चंट और धूर्त होने के साथ खाने की शौकीन थी, और बीच गर्मियों की उस रात बेहद भूखी भी। उसने भोर से सांझ तक इधर-उधर, हर जगह खाना तलाशा था! पर उसे एक निवाला तक न मिला था। जब सूरज जम्हाइयाँ लेने लगा, लोमड़ी पर बेहोशी छाने लगी। उसका पेट गुड़गुड़ाने और बड़बड़ाने लगा। उसके पंजे दुखने लगे और उसकी पूंछ नीचे को लटक आई। उसने खुद को किसी तरह सड़क के किनारे घसीटा और रसभरी की एक कंटीली झाड़ के नीचे जा गिरी।

अचानक मछलियों की सुगंध ने उसकी नाक पर हमला किया। उसने अपनी खोपड़ी उठाई, कान खड़े किए और आँखें सिकोड़ कर सड़क की दोनों तरफ ध्यान से देखा। उसे अब दो भूरे बैल कपड़े से ढ़के एक छकड़े को घसीटते बढ़ आते दिखे। जितना क़रीब पहिए छकड़े को लाते गए मछली की महक और तेज़ होती गई और लोमड़ी की लम्बी लाल जीभ नीचे लटकती गई।

वह झाड़ के नीचे से निकली और सड़क पर आई। उसने अपना शरीर गाड़ियों के आने-जाने से बने निशानों की ओर घसीटा। और तब एक टूटे पौधे की तरह बिना हिलेडुले वहीं पड़ गई।

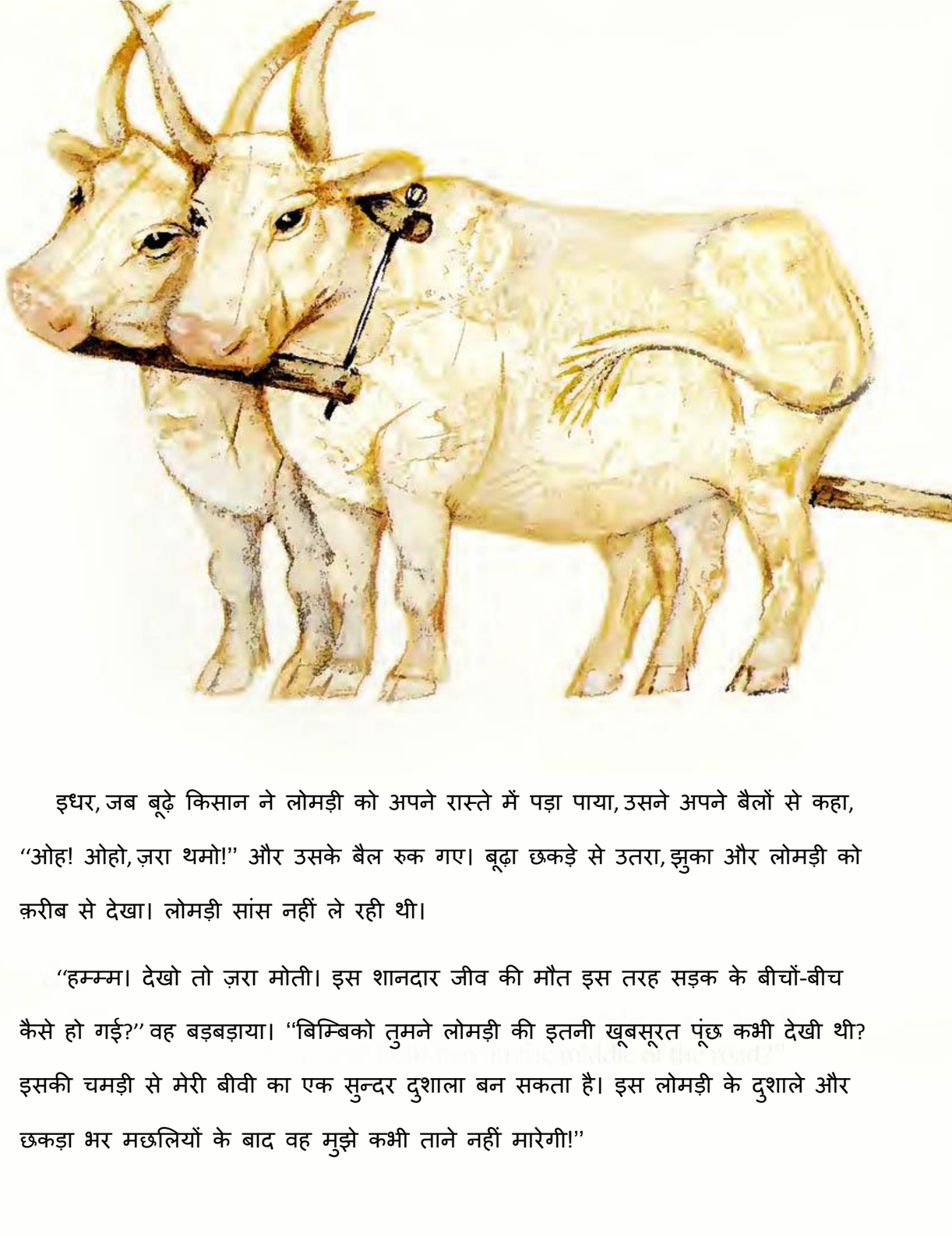

इधर, जब बूढ़े किसान ने लोमड़ी को अपने रास्ते में पड़ा पाया, उसने अपने बैलों से कहा, "ओह! ओहो, ज़रा थमो!" और उसके बैल रुक गए। बूढ़ा छकड़े से उतरा, झुका और लोमड़ी को क़रीब से देखा। लोमड़ी सांस नहीं ले रही थी।

"हम्म्म। देखो तो ज़रा मोती। इस शानदार जीव की मौत इस तरह सड़क के बीचों-बीच कैसे हो गई?" वह बड़बड़ाया। "बिम्बिको तुमने लोमड़ी की इतनी खूबसूरत पूंछ कभी देखी थी? इसकी चमड़ी से मेरी बीवी का एक सुन्दर दुशाला बन सकता है। इस लोमड़ी के दुशाले और छकड़ा भर मछलियों के बाद वह मुझे कभी ताने नहीं मारेगी!"

तब लोमड़ी को उसकी गरदन से पकड़ उसने छकड़े तक घसीटा और उसे अन्दर पटक दिया। "चल मोती! चल बिम्बिको! चलो अपने रास्ते," उसने ऊँची आवाज़ में कहा। बैल जंगल के बीच चल पड़े और किसान भी छकड़े के साथ चलने लगा।

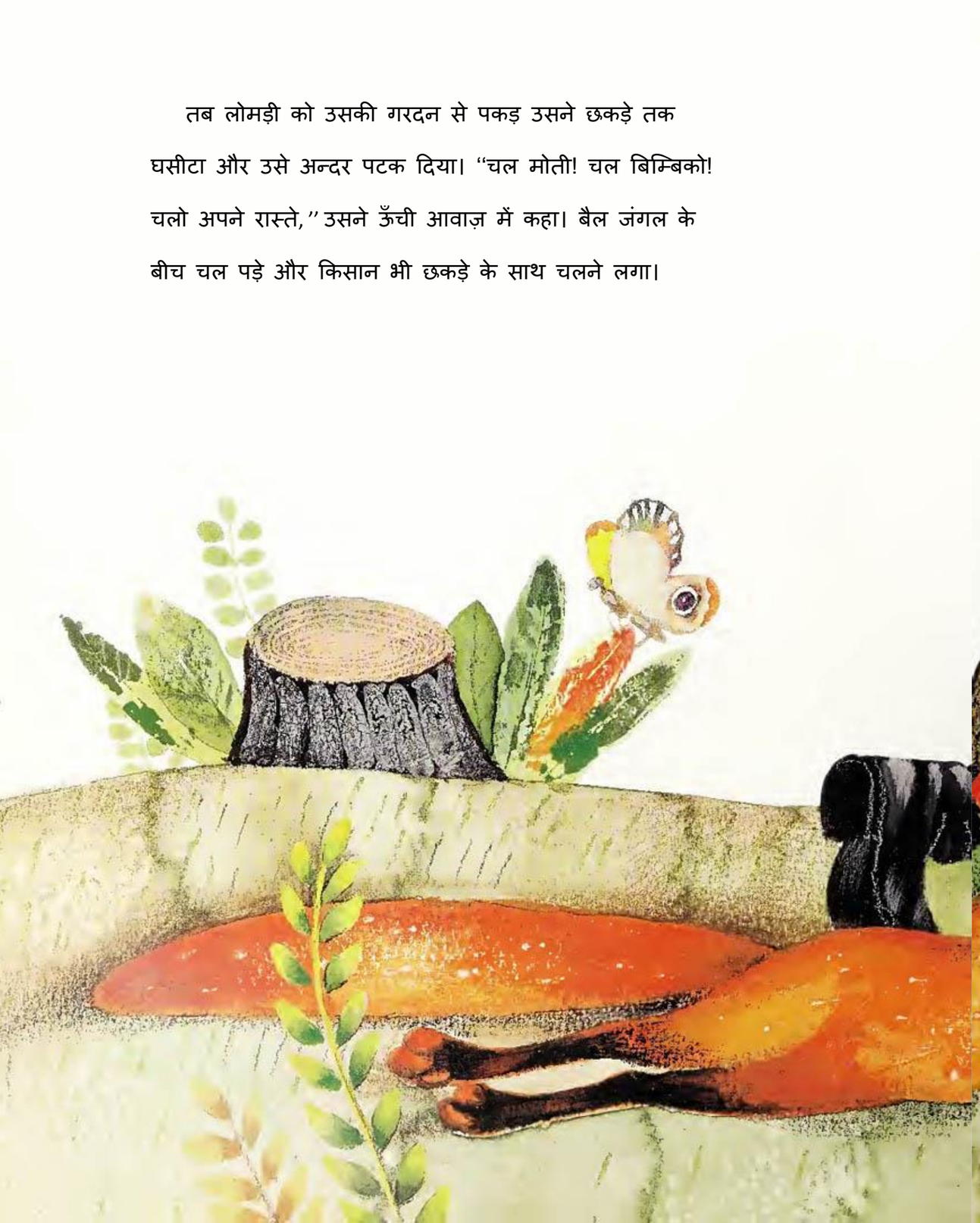

जैसे ही पहिए घूमने लगे, लोमड़ी ने एक लम्बी और गहरी सांस ली। और तब वह ताबड़तोड़ मछलियों को छकड़े से नीचे गिराने लगी। किसान अपने बैलों को हाँकता, उनसे बतियाता बढ़ता गया, इधर लोमड़ी मछलियों को एक-एक कर नीचे गिरीती गई।

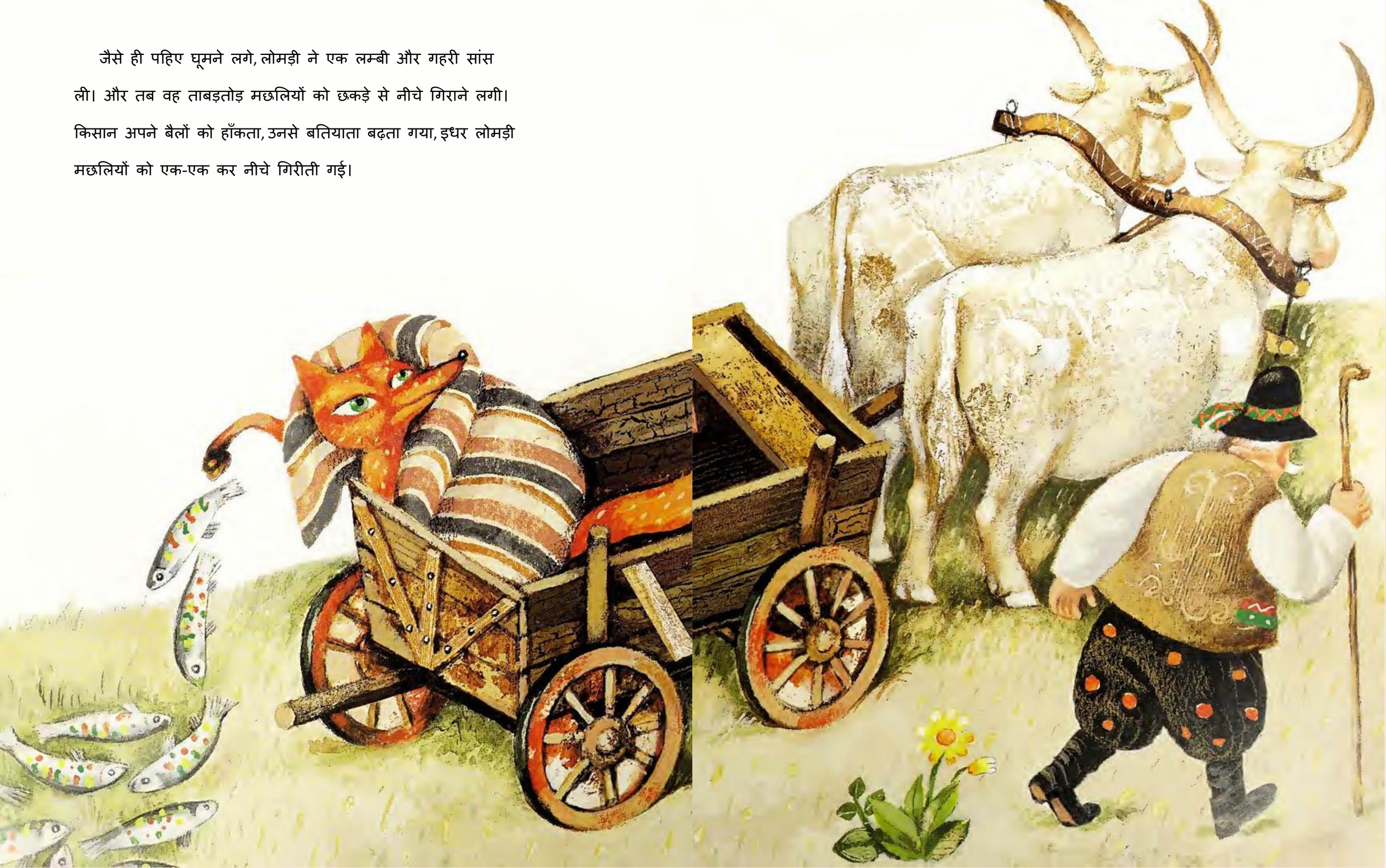

जब छकड़ा जंगल के किनारे पहुँचा, लोमड़ी नीचे कूदी और सड़क की उल्टी दिशा में दौड़ पड़ी। वह कदम-कदम पर अपनी फेंकी मछलियाँ निगलती जा रही थी।

बूढ़ा ठेठ घर के दरवाज़े तक पहुँचा। "बीवी रानी जल्दी आओ! देखो तो मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ - एक सुन्दर लोमड़ी और सौ सेर मछलियाँ!"

पर जब उसकी बीवी बाहर आई उसने छकड़े में पड़ी चन्द मछलियाँ देखीं, और लोमड़ी का तो नामो-निशान नहीं था। उसने अपने पति को फटकारा और लताड़ते हुए कहा कि उसके आलस के चलते उससे छकड़ा भरा तक न गया।

चकराए बूढ़े ने छकड़े में झांका तो पाया कि उसकी बीवी सच कह रही थी। लोमड़ी तो लोमड़ी उसकी पकड़ी ज़्यादातर मछलियाँ भी गायब थीं। "अरे!" वह फुसफुसाया और अपने बैलों को खोलते वक़्त, वह अपनी बीवी को घूरता और अचरज से सिर हिलाता रह गया।

"तालाब कितना चैन भरा और शान्त था...मोती, बिम्बिको क्या तुमने कभी सोचा है कि बारहसिंगे के माँस का स्वाद कैसा होता है? तुम दोनों के साथ अगर मैं शिकार करने लैपलैण्ड के लिए निकलूँ तो सफ़र में महीनों लग सकते हैं।"

बूढ़ा यह सोच मुस्कुराया, उसने अपने बैलों को सानी-चारा खिलाया और तब अपने धंधों में लग गया।

लेखक की कलम से

यह कहानी हंगरी की एक लोकथा के पहले आधे पर आधारित एक लालची और चालाक, मछली पसन्द करने वाली लोमड़ी की है। बचपन में मुझे इसे सुनना और तब बाद में अपने दो बच्चों को सुनाना बेहद पसन्द था। अन्य स्त्रोतों के अलावा आप इसे क्रांगा मीसैक नामक किताब में पा सकते हैं, जो द्वितीय विश्वयुद्ध के कुछ पहले या कुछ बाद में बुडापेस्ट में मोरा किआडो द्वारा प्रकाशित की गई थी।

लेक बॉलटेन 48 मील लम्बी है और यूरोप की सबसे बड़ी झील है। यह हंगरी के पश्चिमी भाग में स्थित है। यह लैपलैण्ड से क़रीब 2,200 मील की दूरी पर है।

जूडित बॉडनर

जब अपने माता-पिता के साथ अमरीका आईं वे केवल हंगेरियन और जर्मन बोलती थीं। अंग्रेजी उन्होंने स्कूल में दाखिला लेने के बाद ही सीखी। बाद में उन्होंने हिस्पानी, रूसी और फ्रांसीसी भाषाओं का अध्ययन किया और बर्कले स्थित कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से सांस्कृतिक मानव शास्त्र की डिग्री पाई। अब वे बाल पुस्तकों का सम्पादन करती हैं। वे और उनका परिवार अपना समय न्यू यॉर्क और पेन्सिलवेनिया में गुज़ारते हैं। वे प्रचुर मात्रा में मटर और टमाटर, आलू और गाजर उगाते हैं, पर पशुओं के नाम पर उनका बस एक सुरमई बिलौटा है और एक काला-भूरा 'डम्बरमैन'। यह उनकी पहली क़िताब है।

अलैक्सी नाचोव

सोफ़िया, बुल्गारिया में पैदा हुए और वहीं पले-बढ़े। उन्होंने वहीं बाल पुस्तकों के लिए चित्र बनाए, फाइन आर्ट प्रिंट बनाए और ललित कला अकादमी में प्रोफेसर भी रहे। वे 1990 में अमरीका आए। उन्होंने तब से 9 बाल पुस्तकों के लिए चित्र बनाए हैं जो प्रशंसित हुए हैं। वे फिलहाल डेलवेयर में अपनी पत्नी बोयाना बुडेवस्का और अपने पुत्र स्टीफान के साथ रहते हैं।